नागाजून और प्रगतिशील काव्य : एक चिंतन

डॉ. जीत सिंह
स. प्रो. हिंदी
कुमाऊ(रायपुर) महाविद्यालय
बादलपुर (गृ.बुजुर्ग)

शोध सारांश
नागाजून घूमवक्कल प्रसिद्धि के व्यक्ति थे जो कि ये आदत बचपन में अपने आश्वासन से मिली थी।
वढ़ने में वे 'घूमवक्कल घास्त्र' के लेखकसांक्तिक्याः के लम्बे साहस्तिक रहे। राहुल जी पर नागाजून के
मेंन अवस्थारी लेखक हैं- राहुल उनका साहित्य और व्यक्तित्व, राहुल संक्तिक्याः और विलक्षण
रहते है। नागाजून और राहुल जी का साथ विश्वास यात्रा से लेकर जेल यात्रा तक रहा। कहा जाता है
कि जेल में राहुल जी बोलकर नागाजून से अपना विश्वास लिखवाते थे। कथा रचना की प्रभाव इच्छा
नागाजून में बढ़ते ही व्यक्ति हुई। नागाजून अपने पत्रों में लिखते हैं कि अगले कुछ दिनों में मेरा जीवन होगा
- इलाक्काबाद, पटना, दिल्ली, बिहार ब्राह्मण, जहाँ से जाता आदि। इनके
अपने प्रभाव में पत्र उमेश, इंदिरा, बहादुर, लखनऊ, अमृतसर, देवधर, श्रीनगर, पीलीभीत आदि
यात्राओं में लिखी गयी है। जबले में अपनी रचनाएँ, हिंदी और बंगाली की पत्रिकाएँ, काफी दिनों
तक अपना 'यात्री प्रकाशन' लेकर धूमने वाले नागाजून का अनुभव और सम्मान संसार जितना विशाल
था, उनकी लिखी अध्यक्ष रचनाओं का बिस्तार भी उत्तरा ही विशाल था।

हिंदी की यात्राओं की भीड़ में 'यात्री' नागाजून के... रहे। आगे चलकर दोनों भूमिकाएँ बंट गई। मैथिली में
उन्हें कहा जाता है कि यात्रा का भी रोचक इतिहास है। 1929 में 'यात्री और हिंदी में नागाजून।'
विवाह नाग के हिंदी काव्य संदर्भों और सांदर्भ
विश्वासी’ के नाम से प्रकाशित हुई थी। दो साल
34 में वह 'यात्री' बना। 'विशाल भारत' में कुछ
dिखाई है कि 'जीवन के अनेक अनुभव और ऐसे अनुभव
विविध' की भाषा में अक्षरित करने, जिनका पालन
नागाजून' बना। तब से नागाजून और 'यात्री' नाम साध
निष्पधा था। कई कल्पना नहीं कर सकता था कि मादा